सम्प्रदायवाद के मूल कारण और समाधान

1. धर्म के दो रूप :- धर्म के सम्बन्ध में पूरी मानव जाति को आस्तिकवादी एवम् नास्तिकवादी दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है । जो आस्तिकवादी हैं अर्थात् "ईश्वर है" ऐसा विश्वास रखते हैं, उनमें पूरे विश्व में तरह-तरह की पूजा विधियाँ प्रचलित हैं, उसके कारण अनेकानेक भेद हैं । मात्र हिन्दुओं में ही ले लें, तो पूजा की विधि को लेकर सैंकड़ों भेद हैं । कोई अनेक देवताओं में और कुछ लोग अपने एक निश्चित इष्ट देव में विश्वास रखते हैं तथा पूजते हैं । फिर भी हिन्दू ऐसा विश्वास रखता है, कि देवता अनेक होते हुए भी परमात्मा एक ही है । भारत में हिन्दू धर्म से ही प्रभावित कुछ धर्म ऐसे भी हैं, जो परमात्मा को नहीं मानते, परन्तु ईश्वरीय विधान, जैसे - प्रेम, करुणा, अहिंसा, शुभ कर्मों आदि पर ज़ोर देते हैं और उनका विचार है, कि समाज के हितार्थ इतना ही यथेष्ट है । बौद्ध अथवा जैन धर्मों को इस श्रेणी में रखा जा सकता है । जो निरे निरीश्वरवादी हैं अर्थात् "ईश्वर है" ऐसा विश्वास नहीं करते हैं, वे भी किसी न किसी काल में जब उन पर कोई शारीरिक, मानसिक अथवा आर्थिक विपदा आ पड़ती है, तब बरबस चिल्ला उठते हैं - **"हे ईश्वर" रक्षा करो** । विश्व प्रसिद्ध भौतिकविद् **अलवर्ट आइंस्टीन** ने भी जो ईश्वर में विश्वास नहीं रखता था, मृत्यु शय्या पर पहुँचने पर कहा था - "कोई सत्ता अवश्य है, जो जीवन एवम् मृत्यु की नियामक है", इसीलिए आज मैं भी मृत्यु को प्राप्त हो रहा हूँ ।

सम्प्रदायवाद की उत्पत्ति इस दुराग्रह से होती है, कि मेरा पैगम्बर और उसके द्वारा बतलायी गयी पूजा-अर्चना विधि ही सर्वोत्तम है उसे मानो, वर्ना दण्ड के भागी बनो । इस लेख में इस सर्वविदित कट्टरवादी प्रवृत्ति के तथ्य के अतिरिक्त कुछ अन्य मूलभूत कारणों पर चर्चा की जायगी ।

आस्तिकवादी धर्मों में आज विश्व में और भी अनेक धर्म हैं, परन्तु जनसंख्या के हिसाब से मुस्लिम एवम् ईसाई धर्म ही दो ऐसे बड़े धर्म हैं, जो अपने को हिन्दू धर्म के बराबर अथवा उससे श्रेष्ठ मानते हैं । **पिछले पचास वर्ष के दौरान भारत सरकार की गलत शिक्षा नीतियों के कारण सम्प्रदायवाद दृढ़ से दृढ़तर हुआ है** । यह सर्वविदित ही है, कि हिन्दू धर्म सबसे प्राचीन धर्म है । अन्य धर्मों का प्रादुर्भाव एवम् विकास काल, मात्र 1400 वर्ष एवम् 2000 वर्ष ही है । हिन्दू धर्म ने अनेक बार उद्भव एवम् पराभव का सामना किया है, परन्तु फिर भी आज तक वह जीवित है । इस धर्म में निश्चय ही कुछ ऐसे अजीबोगरीब तत्व मौजूद हैं, जिस कारण इसका सम्पूर्ण विनाश कदाचित् कभी सम्भव नहीं है । इन तत्वों में कुछ मुख्य तत्वों का विवेचन संक्षेप में निम्न पंक्तियों में करने का प्रयास किया जा रहा है ।

2. प्राकृतिक तत्व :- भारत के प्राचीन विद्वानों ने प्रकृति का गहराई से अध्ययन किया और मानव जीवन को प्रकृति के हर पहलू के साथ सुर से सुर मिला कर चलने में ही मानव का सम्पूर्ण कल्याण देखा । जो प्रकृति के विपरीत चलते थे उन्हें असुर कहा गया, जैसे - रावण अथवा कंस आदि । भारतीय शोधकर्त्ताओं ने अपने शोध के तीन लक्ष्य रखे - **1. स्वस्थ जीवन कैसे जिया जाय 2. मृत्यु कैसे सुखद हो तथा 3. मृत्यु के पार कैसे जाया जाय अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति कैसे हो ?**

2.(अ) स्वास्थ्य सम्बन्धी खोज :- मानव शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए पशु, पक्षी क्या उपाय करते हैं ? कौन से व्यायाम, उपवास अथवा जड़ी-बूटियों का सेवन करते हैं, उन्हीं को ध्यान से संग्रह करके शास्त्र रच डाले । योगासनों में - मयूर, सर्प, कुक्कुट, विडाल, नेवला, सिंह आसन आदि। पशु पक्षी बीमार होने पर उपवास भी करते हैं तथा जंगल से चुनकर जड़ी-बूटी खाते हैं । उन्हीं से शिक्षा लेकर व्रत तथा उपवास एवम् जड़ी-बूटियों का ज्ञान आयुर्वेद शास्त्र में लिख दिया । खान-पान को प्राकृतिक ढंग पर रखते हुए कंद मूल-फलों को ही आहार के रूप में नियोजित किया । बहुत वाद के काल में नगरों में रहने वाले लोगों ने धीरे-धीरे तले एवम् स्वादिष्ट छप्पन प्रकार के पकवानों का विकास कर लिया था, फिर भी प्राकृतिक आहार को ही आदर्श माना जाता रहा । जंगलों में ऋषि-मुनि इसी प्रकार के आहार पर जीवित रहते थे । इस प्रकार मानव का प्राण जीवन पर्यन्त तेजस्वी रहता था और मृत्यु सुखद होती थी ।

2.(ब) मोक्ष की प्राप्ति हेतु उपासना पद्धति की खोज :- मानव जीवन मात्र खाने-पीने एवम् संतति उत्पन्न करने और मर जाने भर के लिए नहीं है, बल्कि इसी जीवन से मानव ईश्वर तक पहुँच सकता है । इस मार्ग की खोज भी पूर्ण रूप से प्रकृति के व्यवहार पर आधारित है । ईश्वर को खोजते-खोजते उन्हें समाधी अवस्था में अनन्त आकाशगंगाओं की आश्चर्यजनक रूप से तीव्र गति के कारण उत्पन्न कालजयी **'ॐ'** ध्वनि सुनायी पड़ी और इसी 'ॐ' ध्वनि को उन्होंने ईश्वर का नाम एकमत से घोषित कर दिया तथा सम्पूर्ण सृष्टि में अनन्त अनन्त सूर्यों से उत्पन्न प्रकाश को ईश्वर का स्वरूप मानकर उस परमसत्ता की उपासना का विधान बना डाला । **ईश्वर यथार्थ में निराकार है, अनामी है, फिर भी उसे नाम और रूप की संज्ञा देकर साधारण साधक की सुविधा हेतु सर्वकाल में उपयोगी सगुण-साकार साधना का विधान बना दिया** तथा इस सारी खोज को गायत्री मंत्र में समाहित कर दिया ।

ईश्वर के नाम एवम् रूप पर ध्यान एकाग्र करने से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है, इस खोज की जानकारी भी **'गायत्री मंत्र'** में दी गयी है । इतनी बड़ी खोज गायत्री में निहित है, इसीलिए **गायत्री मंत्र महामंत्र है, वेदमाता है** । वास्तव में, गायत्री सम्पूर्ण वेदों का सार है । सम्पूर्ण वेदों का लेखन, प्रकृति के रहस्यों की खोजों का संग्रह है, इसी कारण वेद ज्ञान के भण्डार हैं ।

2.(स) प्रतीकोपासना :- सगुणोपासना के सिद्धान्त को **'गायत्री'** द्वारा मान्यता मिलते ही अन्य ठोस आधारों का, जैसे - 'ॐ' के आकार, शिवलिंग और अन्त में मानवाकृति में परब्रह्म परमात्मा से लेकर अनेक छोटे-बड़े देवताओं के वैज्ञानिक एवम् साहित्यिक रूपों का गठन किया गया । इन प्रतीकों (संकेतों अथवा चिह्नों) की रचना एक अति महत्वपूर्ण विधा साबित हुई, जिसने उपासना के क्षेत्र में भारी क्रान्ति ला दी । जैसे - Morse Code ने Telegraphy में भारी योगदान दिया था, ठीक उसी प्रकार **'शून्य एवम् एक'** इन दो चिह्नों (संकेतों) ने कम्पयूटर द्वारा पूरे विश्व में अपना डंका बजा दिया है । आज के युग में बहुचर्चित हो रही प्राण चिकित्सा अर्थात् REIKI में भी Symbols अर्थात् प्रतीकों का बहुत महत्व है और इन प्रतीकों का प्रयोग करके आश्चर्यजनक रूप से रोगों का निदान किया जा रहा है । यह चिकित्सा भी एक प्रकार से आध्यात्मिक विधि है और अध्यात्म के क्षेत्र में प्रतीकों का महत्व भारतीय मनीषियों ने ही समझा था ।

'गायत्री मंत्र' में सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है, कि प्रतीकों पर मन को एकाग्र करने से ईश्वर की प्राप्ति होती है, परन्तु अधिकतर हिन्दू भ्रमवश यह सोचते हैं, कि प्रतीक (मूर्ति) ही सब कुछ है । **जिस प्रकार करामाती कम्पयूटर में Electron की शक्ति 'शून्य और एक' इन दो चिह्नों को आधार बनाकर सारा कमाल करती है, ठीक उसी प्रकार मानव मस्तिष्क द्वारा प्रतीक (मूर्ति) पर एकाग्र की हुई मनः शक्ति चमत्कारिक शक्तियों का सृजन करती है । इस बात को ठीक से समझना होगा ।**

एक बार ब्रह्म से लेकर हर देवी-देवता की मानवाकृति जब तय कर ली गयी, तब मनोवैज्ञानिक कारणों को ध्यान में रखकर उन देवी देवताओं को आधार बनाकर अनेकानेक कथाओं का सृजन तत्कालीन साहित्यकारों ने कर डाला । इन कथाओं में अलौकिकता एवम् दैवी शक्ति द्वारा चमत्कारपूर्ण घटनाओं को जोड़ा गया, ताकि जनसाधारण का विश्वास दृढ़ हो सके । ऐसी कथाएं सभी धर्मों में लिखी गयी हैं । हर कथा के पीछे कोई आदर्श, कोई संदेश अथवा कोई उच्च उपनिषदिक् विचार को सर्व सुलभ बनाना ही उद्देश्य रहा था । ये कथाएं ऐसे ही बनायी गयी थीं, जैसे कि आज टेलीविज़न के वृत्तचित्र अथवा फिल्मी कथाएं लिखी जाती हैं । उन कथाओं में सैक्स के पुट भी थे । उदाहरणार्थ : "इन्द्र द्वारा अहिल्या का" तथा "विष्णु द्वारा वृन्दा का शील भंग करना" आदि ।

3. समग्रता एवम् सौन्दर्य की दृष्टि :- भारतीय मनीषियों ने अच्छी प्रकार से अनुभव कर लिया था, कि समग्रता में ही सौन्दर्य है तथा विज्ञान के साथ साहित्य का संगम करने से ही कलाओं का विकास होगा एवम् सब का हित होगा । इस संगम से ही भारत की समृद्ध संस्कृति का विकास हुआ है । निम्न पंक्तियों में उद्धृत दो उदाहरण इस विचार को ठीक से समझने में सहायक होंगे । मानव शरीर को यदि बीच से चीर दिया जाय, तो भीतर कितना वीभत्स दृश्य दिखलायी देगा, परन्तु भला हो, उस ब्रिटिश डॉक्टर का, जिसने डरते डरते पहली बार एक मुर्दा चीरा और तमाम अंगों का अध्ययन किया । आज उस डाक्टर के द्वारा किए गये दुःसाहस का विश्व को असीम लाभ मिल रहा है । यह वीभत्स, परन्तु सुकृत विज्ञान कहलाया । परन्तु भगवान ने इस मानव शरीर को ठीक प्रकार से सिलाई आदि करके कितना सुगढ़ और सुन्दर बना दिया है, कि भीतर के सभी अंग अपना कार्य भी ठीक-ठीक करते हैं तथा बाहर से वह सुन्दर भी लगता है । **तो यह हुआ साहित्यिक कवच।**

एक अंगूर का उदाहरण भी लें ! अंगूर कितना रस वाला, मधुर तथा गूदे से भरा स्वादिष्ट शक्तिदायक होता है और उसके भीतर एक सिकुड़ा-सा छोटा सा बीज होता है, जिसे हम बहुधा फेंक देते हैं । इस बीज से करोड़ों अंगूर फिर पैदा किए जा सकते हैं, जबकि रस तथा गूदे से कुछ भी नहीं पैदा होता । **इस बीज का महत्व माली ही जानता है । यह बीज विज्ञान है और रस तथा गूदा, कला एवम् साहित्य । इस बीज रूपी विज्ञान से करोड़ों बार वेद लिखे जा सकते हैं,** परन्तु साहित्य से कदापि नहीं, यद्यपि साहित्य, विचारों को व्यक्त करने का एक मात्र माध्यम है । इसी परस्पर निर्भरता को ठीक से समझ कर प्राचीन शोधकर्त्ताओं ने उपासना पद्धतियों को अधिक सरस एवम् सर्वग्राह्य बनाने हेतु कविताओं, कथाओं, प्रतीकों आदि के खोल में वैज्ञानिक अर्थात् प्राकृतिक तथ्यों को छुपा कर एक समग्र और सुन्दर वाङ्मय की रचना की थी, यह थी **'समग्रता की सोच'** । इसीलिए सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय से लेकर पुराणों तथा भागवत, महाभारत तथा रामचरितमानस तक का लेखन साहित्यिकी कवच से ढका हुआ है । अधिकतर विद्वान यह तो मानते हैं, कि वेद का ज्ञान, सम्पूर्ण भौतिकी, रसायन तथा विज्ञान की सभी शाखाओं के ज्ञान पर आधारित है, परन्तु वे उसकी व्याख्या, मात्र साहित्यिकी दृष्टि से ही कर पाते हैं, इसी कारण आज वेदों के बारे में घोर भ्रान्ति फैली हुई है । **भ्रान्ति का एक और कारण है, कि संस्कृत साहित्य में 'एव' तथा 'इव' का दुरुपयोग तो हुआ ही है, साथ में 'दर्शन' शब्द को भी ग़लत समझा गया है** । आज विज्ञान के युग में इस बात का खुलासा करने की परम आवश्यकता आ पड़ी है । **अतएव जब सम्पूर्ण समाज भ्रान्ति रूपी मलेरिया से ग्रस्त है, तब चॉकलेट की परत को हटाकर शुद्ध कुनीन खिलाने से ही समाज का हित होगा, चाहे वह कितनी ही कड़वी अथवा नीरस क्यों न हो** । विद्वानों का कहना है, कि जब सारी की सारी जा रही हो, तब आधी में संतोष कर लेने में ही समझदारी है । समाज में जब-जब समग्रता की समझ की कमी रही तब-तब हम विरोधियों को अपना पक्ष नहीं समझा पाए और हिन्दू धर्म को गहरी चोट खानी पड़ी, जिसकी चुभन सदियों तक बनी रही । ऐसी उदात्त एवम् सम्पूर्णता की सोच और धर्मों में स्पष्ट नहीं दिखलायी पड़ती ।

4. ईश्वर उपासना की दो मुख्य विधियाँ :- जनसाधारण जिसका बौद्धिक स्तर उच्च कोटि का नहीं है, उनके लिए सरलतम विधि एवम् विद्वान व्यक्तियों के लिए ज्ञान-विज्ञान वाली विधि, दोनों विधियों का प्रावधान हिन्दू धर्म में है । जबकि अन्य धर्मों में एक ही विधि अर्थात् सरलतम वाली विधि है । जनसाधारण वाली विधि के लिए ईश्वर पर श्रद्धा एवम् ईश्वर के चरित्रों की कथाओं पर सत्य की भाँति विश्वास करना तथा मूर्तियों को साक्षात् जीवित परमात्मा मानना, दो आवश्यक शर्तें हैं (भवानी शंकरौ वन्दे, श्रद्धा विश्वास रूपिणौ । याभ्यां बिना न पश्यन्ति, सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम् ।। - रामचरितमानस बा.कां. श्लोक २), जबकि विद्वानों के लिए ईश्वर पर सिर्फ श्रद्धा रखने भर से काम चल जाता है (श्रद्धावान लभते ज्ञानम् - गीता ४/३९) । ज्ञानी-विज्ञानी के लिए मूर्तियों को साक्षात परमात्मा मानना आवश्यक नहीं है तथा ईश्वर सम्बन्धी कथाओं पर सत्य की भाँति विश्वास करना भी आवश्यक नहीं है, ये दोनों बातें साधना में सहायक भर हैं, इसलिए मार्गदर्शक अवश्य हैं । **हिन्दू धर्म में ज्ञानी-विज्ञानी व्यक्ति गीता, उपनिषद् एवम् दर्शन शास्त्रों का अध्ययन करके तर्क-वितर्क द्वारा अपना साधना पथ तय करते हैं, जबकि अन्य धर्मों में तर्क करना कुफ़्र है, निषिद्ध है अर्थात् धर्म के खिलाफ है, अतः दण्डनीय अपराध है । आज सम्पूर्ण हिन्दू धर्म में यह अलग-अलग सीमा रेखा स्पष्ट रूप से दिखलायी नहीं पड़ रही है । एक सहस्त्र वर्ष की दासता के कारण सब कुछ गड्मड् हो चुका है, लेकिन आने वाले विज्ञान के युग को ध्यान में रखते हुए अब सभी सत्यों को उजागर करने में ही हित है, कारण, कि भावी पीढ़ी तर्कसम्मत बात को ही अपनायेगी।**

जनसाधारण के लिए नियत की गयी विधि में अंध श्रद्धा का ठोस आधार साधना में सहायक तो है, परन्तु कट्टरता के कारण सम्प्रदायों के बीच संघर्ष का सनातन कारण बना हुआ है । हिन्दू धर्म में सहनशीलता की ऊर्जा उपनिषदों के महान ज्ञान के कारण है । राम मन्दिर जैसा गरम-गरम मुद्दा हिन्दू समाज को एक जुट बनाए रखने हेतु आवश्यक है, तो दूसरी ओर अन्य विरोधी धर्म घोर कट्टरता के कारण अपना दावा किसी भी कीमत पर छोड़ने को तैयार नहीं हैं । यही बात सैंकड़ों वर्षों से घृणा और खून खराबा का कारण बनी हुई है और इसके समाधान का कोई उपाय भी नहीं दिखलायी पड़ता।

5. धर्म निरपेक्षता :- पिछले पचास वर्षों से हमारे राष्ट्र के कर्णधारों ने एक बड़ा भ्रम पाल रखा है, कि सभी धर्म समान हैं और उन्हें समान रूप से फलने-फूलने का अधिकार है । इस विचार को धर्म निरपेक्ष के सिद्धान्त के नाम से जाना गया अर्थात् राज्य का कोई अपना धर्म नहीं है । यह ठीक है, कि सभी धर्मों में अच्छी बातें हैं, परन्तु वैदिक धर्म में ऐसा क्या नहीं है, जो अन्य धर्मों में है । वैदिक धर्म में सम्पूर्णता है, बहुत विशालता एवम् सार्वभौमिकता के सभी गुण हैं, जो औरों में नहीं हैं । (कृपया उपर्युक्त पैरा 4 देखें)

न्याय की दृष्टि से देखा जाए, तो सभी धर्मों को समानता के धरातल पर रख देना एकदम अव्यवहारिक है । प्रश्न उठता है, कि क्या प्रकृति में भी ऐसा होता है ? ईश्वर प्रकृति का तथा जीवों का शासक है, तभी सृष्टि में सभी कुछ ठीक चल रहा है । यदि तीनों को बराबर का दर्जा मिल जाय, तो फिर टकराहट ही टकराहट होना स्वाभाविक है । आज हमारे राष्ट्र की सारी ऊर्जा बाबरी ढाँचा एवम् राममन्दिर मुद्दे पर नष्ट हुई जा रही है । अभी तो दो ही दावेदार थे, अब बौद्धों ने भी अपना दावा ठोक दिया है । विश्व के किसी भी देश में ऐसा नहीं है । हर देश का अपना-अपना धर्म है । चीन, जापान आदि पूर्वी देशों का धर्म बौद्ध है । यूरोपीय देशों अमरीका आदि का ईसाई तथा मध्य एशिया व अरब देशों का मुस्लिम धर्म है । उसी के हिसाब से इनके देश में त्यौहार तथा सरकारी

छुट्टियाँ हुआ करती हैं, परन्तु भारत ने अपनी अति सदशयता एवम् सहनशीलता कहें अथवा अज्ञानता या डर के कारण जो रुख अपनाया है, उससे दिनोंदिन टकराहट बढ रही है । पूर्वकाल में भारत में यह नियम रहा है, कि राजा की अध्यक्षता में दावेदार धर्मों के विद्वान शास्त्रार्थ करते थे और जो विजयी होता था, उसी धर्म को राजधर्म मान लिया जाता था । तलवार अथवा लालच के द्वारा हिन्दू ने कभी भी किसी का धर्म परिवर्तन नहीं किया । आज सभी धर्म अपनी-अपनी किताब के आधार पर श्रेष्ठ होने का दावा करते हैं । कोई भी एक धर्म दूसरे की किताब को मान्यता देने को तैयार नहीं है । तो एक मात्र रास्ता यह है, कि सभी धर्मों को एक बार निरस्त मान लिया जाय और विज्ञान की भाषा में जो धर्म श्रेष्ठ साबित हो, उसे ही भारत का राजधर्म और अनन्तर में विश्व धर्म स्वीकार कर लिया जाय ।

6. हिन्दू धर्म और विज्ञान :- हिन्दू धर्म पूर्ण रूप से प्राकृतिक नियमों एवम् सिद्धान्तों पर आधारित है और विज्ञान ने प्रकृति के रहस्यों और सिद्धान्तों का खुलासा किया है । इस तथ्य की एक अति संक्षिप्त झलक आप उपर्युक्त पैरा 2 के (अ),(ब),(स), पैरा 3 तथा पैरा 4 के अन्तर्गत देख सकते हैं । यह सोचना नितान्त अज्ञानता है, कि धर्म को विज्ञान के आधार पर व्याख्यायित नहीं किया जा सकता । जिन्हें धर्म शास्त्रों एवम् विज्ञान का समुचित ज्ञान है वे ऐसा नहीं मानते, लेकिन बहुमत को शायद यह बात गले नहीं उतर पायगी । इसका उत्तर यह, कि क्या स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो में 1893 ई. में हुए विश्व धर्म सम्मेलन मे यह सिद्ध नहीं कर दिया था, कि हिन्दू धर्म सर्वोच्च और सम्पूर्ण धर्म है ? विदेशी लेखक किताबें लिख-लिख कर हमारे धर्म की वैज्ञानिकता सिद्ध करने में लगे हुए हैं और हम हैं, कि मैमनों की भाँति डरे और सहमे से छुपते फिर रहे हैं, कि कोई विदेशी आए और हमारी रक्षा करे । इस सम्बन्ध में पाठकगण कृपया Dr. Fritjoff Capra द्वारा लिखित विश्व विख्यात पुस्तक Tao of Physics को देखें ।

7. धर्म परिवर्तन और प्रतिक्रिया :- ईश्वर उपासना को सरल से सरलतम बनाने के प्रयास में अनेकानेक विधान खोजे गये, क्योंकि जनसाधारण short cut चाहता है, इसीलिए वैदिक वाङ्मय तथा अनेकानेक ग्रंथों की रचना हुई । **परन्तु उन सभी विधियों का आधार धारणा-ध्यान-समाधी को कैसे सर्वसुलभ बनाया जाय, इसी प्रयास में सभी विस्तार हुए हैं । जबकि अन्य धर्मों में इस धारणा, ध्यान तथा समाधी की कोई स्पष्ट समझ नहीं देखी जाती । सारा झगड़ा प्रतीकों को लेकर है, इसी कारण हिन्दू समाज भी भ्रमित है तथा दूसरे लोग तो घृणा और घोर दुश्मनी की सीमा तक सैंकड़ों वर्षों से खून-खराबे में लगे हुए हैं ।**

सैंकड़ों वर्षो के मुस्लिम शासन के दौरान हिन्दुओं को इसी मूर्ति पूजा के कारण बलि का बकरा बनाया जाता रहा है और अभी भी सरहद पार से खून खराबा होता ही रहता है । एक बड़े हिन्दू समाज का मुस्लिम शासन के दौरान तलवार के ज़ोर पर धर्म परिवर्तन किया गया, फिर बाद में ईसाइयों द्वारा छलबल तथा लालच द्वारा हिन्दुओं को ईसाई बनाया गया और यह क्रम अभी भी जारी है । देश में अब कुछ थोड़े से हिन्दुओं ने साहस जुटा कर कहा है, कि विदेशी ईसाई मिशनरियों को भारत से वापिस जाना होगा । धर्मान्तरण बन्द होना चाहिए तथा इस मुद्दे पर देश व्यापी बहस होनी चाहिए अर्थात् टकराहट के तेवर दिन व दिन बढ़ रहे हैं । ईसाई मिशनरी विदेशी धन और ईसाई राष्ट्रों के बल पर गर्वित हैं और हिन्दू की सहनशीलता का लगातार दोहन होता चला जा रहा है । बंगलादेशी लोग घुसपैठ द्वारा भारत पर बोझ बनते जा रहे हैं । इस प्रकार धर्म के आधार पर भारत के और भी टुकड़े होने की परिस्थितियाँ बनती जा रही हैं । यह बात विचारणीय है, कि यदि राष्ट्र अखण्ड रहेगा, तो धर्म भी बचा रहेगा । इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर निम्नांकित सुझावों पर पूरा राष्ट्र चिन्तन करे, ऐसी विनम्र प्रार्थना है ।

8. समाधान के लिए सुझाव :- <u>सर्वप्रथम तो हिन्दूधर्म के शीर्षस्थ धर्म गुरुओं को उपरोक्त बातों को ठीक से समझना होगा तथा निम्न बिन्दुओं पर अपनी सोच को स्पष्ट करना होगा</u> :- *(1) मूर्तियों तथा कथाओं के गठन का मनोवैज्ञानिक आधार क्या था । (2) वैज्ञानिक तथ्यों को क्यों और किस प्रकार 'समग्रता की सोच' के कारण साहित्य के कवच में लपेटा गया था, अतएव आज के संदर्भ में साहित्य के खोल को एक ओर रखकर पूरे हिन्दू धर्म की शुद्ध वैज्ञानिक व्याख्या को प्रचारित करना होगा और इस पर विश्वव्यापी समझ पैदा करनी होगी । (3) प्रैस को तथा भारत के सभी धर्म गुरुओं को सर्वप्रथम उपनिषदों में निहित विचारों को आदर्श मानकर प्रचारित तथा प्रसारित करना होगा ।* <u>निम्न कार्य भारत सरकार को करने होंगे</u> - *(4) पूरे भारत में स्कूल स्तर से आरम्भ करके उपनिषदों के ज्ञान को कक्षाओं में सरल भाषा में पढ़ाना (5) संस्कृत एवम् विज्ञान को बारहवीं कक्षा तक अनिवार्य करना होगा (6) धर्मान्तरण पर सम्पूर्ण रोक लगानी होगी (7) समान सिविल कोड बनाना होगा । (8) भारत के धर्म शास्त्रियों को अपना-अपना आग्रह छोड़ कर मिल बैठकर राष्ट्र हित को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वैदिक वाङ्मय की व्याख्या को मान्यता देनी होगी । (9) विश्व स्तर के विद्वानों, साहित्यकारों, वैज्ञानिकों के सम्मिलित प्रयासों के लिए उन्हें आमंत्रित और उत्साहित करना होगा ।*

9. गाँधी जी एवम् धर्म परिवर्तन :- अंग्रेजों के शासनकाल में ईसाई पादरियों ने अथक प्रयास किए थे, कि किसी प्रकार यदि गाँधी जी को ईसाई बना लिया जाय, तो पूरे हिन्दू समाज को ईसाई बनाना बहुत आसान हो जायगा, परन्तु गाँधी जी अपने गहरे पारिवारिक हिन्दू संस्कारों के कारण उनके प्रभाव में नहीं आए ।

गाँधी जी अन्त तक भारत-पाकिस्तान के बटवारे का कड़ा विरोध करते रहे । सम्भव है, कि वे यह सोचते रहे हों, कि मुस्लिम शासनकाल में रसखान एवम् कबीर जैसे मुस्लिम यदि हिन्दू सन्त बन सकते थे, तो भारत को राजनैतिक स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् हिन्दू बहुल शासित सरकार से शिक्षा नीति में उपरोक्त नियमों को लागू करवा कर पूर्व में हिन्दू से बने मुस्लिमों को पुन: हिन्दू बना लिया जायगा और ईसाई तो अंग्रेजों के जाने के बाद स्वत: ठण्डे हो जाएंगे । परन्तु भारत का दुर्भाग्य रहा, कि गाँधी जी के शीघ्र प्रयाण के पश्चात् देश की बागडोर ऐसे नेताओं के हाथ में आ गयी, जिन्हें हिन्दू संस्कार था ही नहीं और इन पचास वर्षों में परिस्थितियाँ इतनी विषम हो चुकी हैं, कि बस ईश्वर ही रक्षा करे, तब बात अलग है ।

फिर भी आशा की एक किरण है, कि यदि वर्तमान सरकार किसी प्रकार भी शिक्षा नीति में शनै: शनै: उपरोक्त नियमों को लागू कर पायी, तो भारत की प्रभुसत्ता एवम् अखण्डता सुदृढ़ होगी और सुरक्षित भी रहेगी तथा भारत एक बार फिर हर क्षेत्र में विश्व गुरु बन सकेगा ।

शुभम् भूयात्

नोट : आदरणीय पाठकों से निवेदन है कि वे अपने विचारों से सम्पादक एवम् लेखक को अवगत कराएं, जिसके लिए लेखक उनका अग्रिम धन्यवाद करता है।